अध्याय 2

HKARD1

आदिमानव

चित्र– 2.2

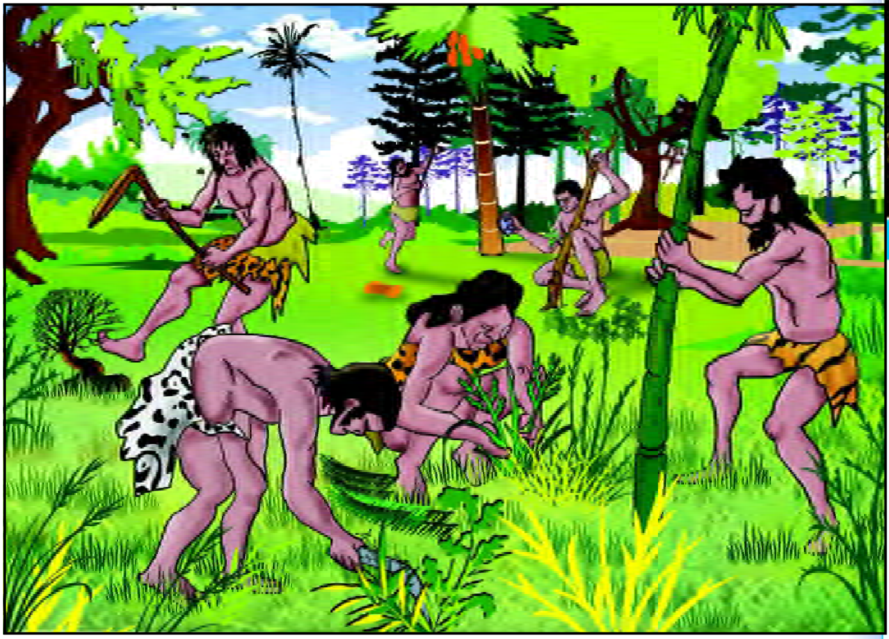

चित्र–2.1 संग्रहण

इन चित्रों को ध्यान से देखिए और आपस में चर्चा कीजिए कि इनमें क्या–क्या हो रहा है।

आज से हजारों साल पहले हमारे पूर्वजों का रहन–सहन हमारे जैसा नहीं था। वे जंगलों में रहते थे और जंगली कंद–मूल एवं फल, आदि इकट्ठा करके खाते थे। साथ ही वे जानवरों का शिकार करके उनका मांस भी खाते थे। आज आपके भोजन की ज्यादातर चीजें खेतों में उगती हैं लेकिन उन दिनों लोग खेती नहीं करते थे।

आदिमानव छोटे–छोटे समूहों में रहा करते थे। लेकिन वे किसी एक जगह घर बनाकर नहीं रहते थे। जब जंगल में किसी एक स्थान पर कंद–मूल, फल, शिकार आदि समाप्त हो जाता था तो उनका पूरा समूह दूसरे स्थान की ओर चल देता था। इस तरह वे भोजन की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे।

आइए – कुछ चीजों की सूची बनाते हैं–

1. क्या आप बता सकते हैं कि आपके भोजन में ऐसी कौन–कौन–सी चीजें हैं जिन्हें जंगलों से इकट्ठा किया जाता है ?
2. आपके भोजन और आदिमानवों के भोजन में क्या–क्या अंतर है ?
3. क्या आदिमानवों को बर्तनों व चूल्हों की जरूरत पड़ी होगी ?

आदिमानव पेड़ों की पत्तियों, छाल तथा जानवरों की खाल से अपने शरीर को ढँकते थे। पुरुष और महिलाएँ आभूषणों का उपयोग करते थे। वे लकड़ी, सीप, शंख, चमकीले पत्थर एवं हड्डी से बने आभूषणों का प्रयोग करते थे।

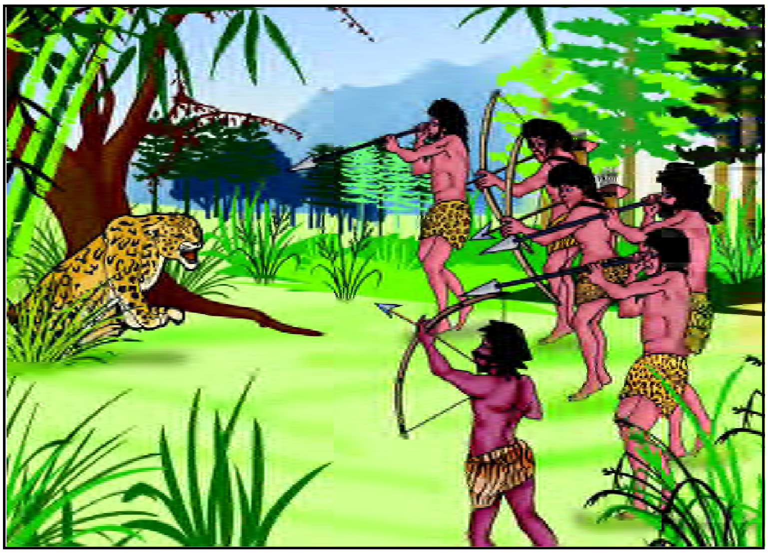

चित्र–2.3 शिकार

आइए अपने साथियों से चर्चा करके इन प्रश्नों के उत्तर लिखें–

1. आदिमानव घर क्यों नहीं बनाते थे?
2. अगर वे घर नहीं बनाते थे तो रात कहाँ गुज़ारते होंगे?
3. आदिमानव ऊनी या सूती कपड़े क्यों नहीं पहनते थे?
4. जंगलों में तो अनेक किस्म के हिंसक जानवर रहे होंगे। उन जानवरों से वे अपना बचाव किस प्रकार करते होंगे?
5. आदिमानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों घूमते रहते थे?

पत्थरों के औजार

उन दिनों लोग लोहा या पीतल जैसी धातुओं से परिचित नहीं थे। वे अपने आसपास प्राप्त होने वाले पत्थरों से काम चलाते थे। यही पत्थर का टुकड़ा उनका पहला औजार या हथियार था। इन पत्थरों को वे ध्यान से अपनी जरूरत के अनुसार आकार देते थे। शुरू में बड़े पत्थरों से चिप्पियाँ निकालकर औजार बनाने लगे। बाद में पत्थरों के छोटे चिप्पियों को लकड़ी या हड्डी में लगाकर और अधिक उपयोगी औजार बनाते थे। हाथ में आसानी से पकड़े जा सकने वाले पत्थरों से हथौड़े, कुल्हाड़ी, बसूले आदि बनाए जाते थे।

आदिमानवों ने जानवरों का शिकार करने के लिए तीर और भाले भी बनाए, जिनके नोंक पत्थरों के होते थे। वे पशुओं की हड्डियों एवं सींगों से भी हथियार बनाते थे। औजारों का उपयोग आमतौर पर जंगली अनाज इकट्ठा करने, जमीन खोदकर कंद–मूल निकालने तथा जानवरों की खाल उतारने के लिए किया जाता था।

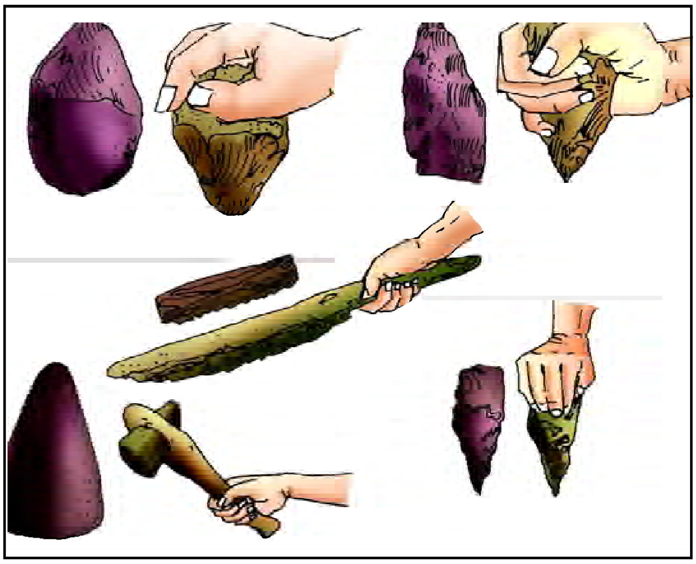

चित्र–2.4 पत्थरों के औज़ार

1. चित्र 1.3 में दिखाए गए पत्थरों के आकार को देखकर बताइए कि उस समय इनसे क्या–क्या किया जाता रहा होगा ?
2. बताइए उस समय को पाषाण (पत्थर) काल क्यों कहते हैं?

आग का उपयोग

ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि औजार बनाते समय या किसी और समय दो पत्थरों के आपस में टकराने से चिंगारी निकली होगी। इससे आसपास की सूखी पत्तियाँ या घास, आदि जल उठी होंगी। इस प्रकार संयोग से हमारे पूर्वजों को आग जलाने का तरीका पता चला होगा। बाद में वे आग द्वारा जंगली जानवरों से अपनी रक्षा भी करने लगे। वे आग में मांस को भूनकर खाने लगे। आग द्वारा ठंड से अपने शरीर की रक्षा भी करने लगे थे।

कैसे पता करते हैं?

क्या आप जानते हैं कि आजकल भी दुनिया में ऐसे लोग हैं जो जंगलों पर निर्भर हैं? वे एक स्थान पर स्थाई रूप से निवास नहीं करते हैं और भोजन–पानी की तलाश में जगह–जगह घूमते रहते हैं। वे भी जंगली कंद–मूल, फल, अनाज आदि खाते हैं तथा शिकार भी करते हैं। छत्तीसगढ़ के वनांचल जैसे बस्तर और सरगुजा में भी कुछ लोगों का जीवन जंगल में शिकार और वनोपज इकट्ठा करने पर आधारित है।

हम आज के ऐसे लोगों के जीवन का अध्ययन करके आदिमानवों के जीवन के बारे में काफी कुछ अनुमान लगा पाते हैं। इसके अलावा हमें खुदाई से उस जमाने की काफी चीजें मिलती हैं, जैसे पत्थरों के औजार और जानवरों की हड्डियों से बने हथियार आदि। उस ज़माने के लोगों ने गुफाओं की दीवारों पर बहुत से चित्र भी बनाए थे जो हजारों साल बाद आज भी हमें देखने को मिलते हैं। इन सब से हमें आदिमानवों की जीवन शैली के बारे में काफी कुछ जानकारी मिलती है।

सामूहिक जीवन

आदिमानव छोटे समूह में रहते थे और उनमें आपसी सहयोग की भावना थी। कंद–मूल, फल, अनाज, आदि इकट्ठा करने का काम आमतौर पर महिलाएँ व बच्चे करते थे। पुरुष मिलजुल कर शिकार करते थे। लेकिन कभी–कभी पुरुष और महिलाएँ दोनों शिकार करते थे और कंद–मूल भी इकट्ठा करते थे। इस प्रकार जो कुछ भी उन्हें प्राप्त होता था, उसे सब लोग मिल–बाँट कर खाते थे। किसी भी वस्तु को बचा कर नहीं रखा जाता था। समूह की सभी चीजों पर सबका समान अधिकार था। उनमें कोई अमीर या गरीब नहीं होता था।

समूह के लोगों में कार्यों का कोई बँटवारा नहीं था। सब लोग सभी काम जैसे– पत्थर के औजार बनाना, शिकार करना, कंद–मूल इकट्ठा करना आदि करते थे। आपस में चर्चा करें कि –

आदिमानवों के समाज में कोई अमीर या गरीब क्यों नहीं हो सकता था ?

धार्मिक रीति–रिवाज व मान्यताएँ

आदिमानव प्रकृति के बहुत करीब थे और पेड़–पौधे, पशु–पक्षी आदि को अपने सगे–संबंधी मानते थे। वे देवताओं में भी विश्वास करते थे। वे मानते थे कि उन्हें खुश करने पर अच्छा शिकार और खाने की अन्य चीजें मिलेंगी। वे अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिये समय–समय पर नाच–गान करते थे। इनमें वे जानवरों के शिकार करने का अभिनय करते थे।

ऐसे ही विश्वास के आधार पर वे गुफाओं की दीवारों पर रंग–बिरंगे चित्र भी बनाते थे। शायद वे मानते थे कि इन चित्रों के माध्यम से उन्हें अपने शिकार में

चित्र–2.5 सिंघनपुर व कबरा पहाड़ी के शैल चित्र

सफलता मिलेगी। छत्तीसगढ़ में रायगढ़ जिले के कबरा पहाड़ी और सिंघनपुर तथा दुर्ग जिले के चितवाडोंगरी और डौंडीलोहारा की गुफाओं में आदि मानवों के बनाए गए चित्र मिले हैं। ये चित्र रंगीन हैं। इनमें छिपकली, घड़ियाल तथा अन्य पशुओं के चित्र हैं। सिंघनपुर की गुफाओं में गहरे लाल रंग के चित्र हैं। यहाँ मनुष्य की आकृतियाँ बनी हैं तथा आड़ी–तिरछी लकीरें भी बनाई गई हैं। एक आकृति में कुछ लोग एक पशु का शिकार करते हुए दिखाए गए हैं। सीढ़ीनुमा आकृति इन चित्रों की विशेषता हैं।

1. आदि मानव चित्र बनाने के लिए रंग किस प्रकार बनाते होंगे ? शिक्षक के साथ चर्चा कीजिए।
2. क्या आज भी पर्व त्यौहारों में नाचना–गाना और चित्र बनाना शामिल है – अगर हाँ तो कुछ उदाहरण दीजिए।

आदिमानवों ने अपने परिश्रम और सूझबूझ से इस धरती के बारे में बहुत–सी जानकारी प्राप्त की, जो आज भी हमारे काम आती हैं। उन्होंने ही यह पता किया कि कौन–कौन से पौधे व फल खाए जा सकते हैं, कौन–कौन से पौधे दवा के काम आते हैं, कौन–कौन से पौधे विषैले होते हैं। उन्होंने आग जैसी महत्वपूर्ण शक्ति पर नियंत्रण किया। औजार बनाने के लिए उचित पत्थर और लकड़ी खोजे। घने जंगलों में आने–जाने के रास्ते खोजे। जानवर और पेड़–पौधों के गुणों को बारीकी से देखकर पहचान बनायी। यही बातें आगे चल कर खेती और पशुपालन करने के आधार बने।

खेती और पशुपालन की शुरुआत

आज से लगभग दस हज़ार साल पहले जंगल से भोजन इकट्ठा करने वाले इन लोगों के जीवन में काफी बदलाव आने लगा। दुनिया के अलग–अलग भागों में रहने वाले लोग कुछ नए तरह के प्रयोग करने लगे। कहीं वे कुछ जंगली जानवरों को पालतू बनाने लगे तो और कहीं वे तरह–तरह के अनाज और पौधे उगाने लगे। इससे लोगों के जीवन में बदलाव आया।

पालतू जानवर

माना जाता है कि सबसे पहले मनुष्यों ने कुत्तों को पाला। कुत्ते बचे हुए भोजन को खाते थे और शिकारियों को शिकार में मदद करते थे। इसके बाद जंगली भेड़, बकरी या गाय आदि जानवरों को भी पाला जाने लगा।

1. इन जानवरों से मनुष्य को क्या–क्या लाभ मिल सकते थे ?
2. कौन–कौन–सी ऐसी चीजें हैं जो उन्हें केवल जानवरों के शिकार से नहीं मिल सकती थी ?

खेती

हमने देखा कि शुरुआत में मनुष्य खेती नहीं करते थे। शायद उन्हें खेती करने की जरुरत ही नहीं थी क्योंकि इतना कुछ खाने की चीजें उन्हें बगैर मेहनत के मिल जाती थीं, तो उन्हें खेती करने की जरुरत ही नहीं पड़ी होगी। लेकिन आगे चलकर यानि आज से करीब दस हजार साल पहले कई समूहों ने खेती करना शुरु किया। वे जान चुके थे कि खाकर फेंके हुए फलों के बीजों से या अनाज के दानों से नए पौधे उग आते हैं। धीरे–धीरे इसी तरह खेती का विस्तार दुनिया भर में हुआ। भारतीय उपमहाद्वीप में खेती की शुरुआत आज से करीब पाँच–छह हजार साल पहले हुई।

शुरुआत में जो खेती होती थी वह आज की तरह स्थाई नहीं होती थी, यानि एक ही खेत में साल–दर–साल खेती नहीं की जाती थी। इस समय खेती के लिए पहले कुछ क्षेत्र के जंगलों को जलाकर साफ किया जाता था। फिर उस स्थान पर दो–तीन साल तक लगातार खेती की जाती थी। उसके बाद खेत में पैदावार कम होने लगती थी। फिर उस स्थान को छोड़ कर किसी दूसरे स्थान पर खेती करते थे।

इस किस्म की खेती को स्थानांतरण खेती या झूम खेती कहते हैं। आज से लगभग 50–100 साल पहले तक इस प्रकार की खेती प्रचलित थी। भारत में विशेषकर उत्तर–पूर्वी राज्यों व अन्य आदिवासी क्षेत्रों में इसी तरह की खेती की जाती थी। छत्तीसगढ़ के कुछ क्षेत्रों में विशेषकर बस्तर तथा सरगुजा जिलों के सघन आदिवासी क्षेत्रों में इस तरह की झूम खेती अभी भी होती है।

कक्षा में चर्चा कीजिए कि खेती अपनाने के बाद लोगों के जीवन में क्या–क्या बदलाव आए होंगे? इसे अपनी कापी में लिखें।

स्थाई रूप से बसने लगे

खेती की शुरुआत के कारण इस समय के मनुष्यों के जीवन में काफी बड़ा परिवर्तन आया। समूह के सभी लोगों की मेहनत से खेती का इलाका फैलता गया। वे शिकार तो अब भी करते थे किन्तु भोजन की तलाश में जगह–जगह घूमने की जरूरत उन्हें नहीं रही। इसके अतिरिक्त अब लोग एक स्थान पर स्थाई रूप से बसने लगे। खेती करने के कारण उनका एक स्थान पर लंबे समय तक रहना जरुरी हो गया क्योंकि फसलों की बुआई से ले कर कटाई तक में काफी समय लगता था। लगातार खेतों में काम व रखवाली करनी पड़ती थी। फसल जब पककर कट जाती थी तो उसे सालभर के उपयोग के लिए बचाकर भी रखना पड़ता था। इन कारणों से खेती करने वाले लोग स्थाई रुप से अपने खेतों के आस–पास ही घर बनाकर रहने लगे। वे लकड़ी, मिट्टी और घास–फूस आदि से घर बना कर स्थाई रुप से रहने लगे। ये घर नदियों, तालाबों और नालों के आसपास बनाए जाते थे। जंगली जानवरों से बचाव के लिए वे अपने घर व बस्ती के चारों ओर घेरा भी बनाते थे।

घरों में अनाज भरकर रखने के लिए बड़े – बड़े कोठे बनने लगे। अनाज पकाने व दूध उबालने के लिए बर्तन बनने लगे, और चूल्हे बनने लगे। अनाज पीसने के लिए सिलबट्टे भी बनने लगे। इस तरह इस काल में मनुष्यों ने कई नई चीजों को बनाना शुरु किया।

इस समय के लोग धरती और प्रकृति को ईश्वरीय शक्ति या देवी माँ का रुप मानते थे। इन शक्तियों को खुश करने के लिए वे पूजा, नाच–गान करते और जानवरों की बलि भी देते थे।

अभ्यास के प्रश्न

HKJMEN

(अ) खाली स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. औजारों को ———————— के हत्थों में बाँधकर अधिक उपयोगी बनाया गया।
2. सिंघनपुर की गुफाएँ ———————— जिले में स्थित है।
3. भारत में खेती की शुरूआत ———————— हजार साल पहले हुई।
4. आदिमानव का पहला पालतु पशु ———————— था।

(ब) संक्षिप्त उत्तर दीजिए–

1. आदिमानव एक जगह रहते तो उनके सामने क्या–क्या समस्याएँ आतीं ?
2. आदिमानवों के औजार किन–किन चीजों के बने होते थे ?
3. आदिमानवों के जीवन के बारे में हमें कैसे पता चलता है ?
4. छत्तीसगढ़ में मिले गुफा चित्रों की क्या–क्या विशेषताएँ हैं?
5. पशुपालन से आदि मानव को क्या–क्या लाभ हुआ?
6. खेती करने के लिए लोगों को एक जगह क्यों बसना पड़ा?
7. खेती करने वाले लोग धरती को देवी माता मानकर उसकी पूजा क्यों करते थे?

(स) योग्यता विस्तार –

1. पाषाणकाल के औजारों के चित्र बनाइए।
2. आदिमानव काल में खेती नहीं थी, तब वह, अपना पेट कैसे भरते थे?